नेपाल: जैव विविधता संरक्षण में पथ प्रदर्शक

द्वारा नरेश नेवार

चितवन, नेपाल, 11 अप्रैल 2015 (आईपीएस) - शाम को, जब सूरज की किरणें, नेपाल की राजधानी काठमांडू से लगभग 200 किमी दक्षिण में, चितवन राष्ट्रीय पार्क, जो कि एक युनेस्को विश्व विरासत है, उसके हरे-भरे परिदृश्य पर पड़ती हैं, तो एक अत्यंत शांत वातावरण कायम हो जाता है।

जैसे ही ऐतिहासिक नारायणी नदी, जो कि भारत में गंगा के बाएं तट की एक सहायक नदी है, उसके ऊपर से कम लुप्तप्राय चमरघेंघ का एक झुंड उड़ान भरता है, इस संवादाता का 65 वर्षीय फॉरेस्ट गाइड जियाना महतो पूर्ण शांति का संकेत देता है: यह दिन का वह समय है जब जंगली जानवर पानी के समीप इकट्ठा होते हैं। पास ही, एक दलदली हिरण नदी के किनारे पर नहा रहा है।

"मनुष्यों की दृष्टि उन्हें दूर भगाती है," महतो ने समझाया, जो कि थारु स्वदेशी जातीय समूह का एक सदस्य है जो सरकार के वन्यजीव संरक्षण के प्रयासों के समर्थन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

"हमें अब वापस लौटना चाहिए," वह आईपीएस को बताता है। इन इलाकों में इधर-उधर घूमना खतरे से खाली नहीं है, खासकर जब से देश में एक समय कम होती बाघ और गेंडे की आबादी में बढ़ोतरी हुई है।

महतो एक आदर्श गाइड है। वह इस इलाके की प्रगति का एक गवाह है जो 1963 में राष्ट्रीय पार्क की स्थापना से आरंभ हुई है, जिसमें स्तनधारियों की 56 प्रजातियों को संरक्षण प्रदान किया गया है।

आज, चितवन नेपाल द्वारा अपनी अनूठी जैव विविधता के संरक्षण के लिए किए गए प्रयासों की एक मिसाल बन गया है। वर्ष के आरंभ में, यह दुनिया का सबसे पहला देश बन गया जब इसने वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड (डबल्यूडबल्यूएफ़) द्वारा तैयार किए गए एक नए संरक्षण साधन को अपनाया, जिसे कंजर्वेशन अश्युर्ड | टाइगर स्टैंडर्ड (सीए|टीएस) कहा जाता है।

गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों और उनके आवास के प्रभावी प्रबंधन और उसकी निगरानी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कायम किए गए सीए|टीएस को इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) और ग्लोबल टाइगर फोरम जैसी संस्थाओं से मान्यता प्राप्त है, जो संयुक्त राष्ट्र के जैव विविधता सम्मेलन (सीबीडी) में तय दुनियाभर के संरक्षण लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके के रूप में इस साधन को अपनाने की इच्छा रखते हैं।

विशेषज्ञ कहते हैं कि अन्य 12 टाइगर रेंज कंट्रीज़ (टीआरसी) को नेपाल के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। नेशनल बायोडाइवर्सिटी स्ट्रेटेजी और एक्शन प्लान 2014-2020 के अनुसार, 2009 में, इस 2 करोड़ 70 लाख की आबादी वाले दक्षिण एशियाई देश में बाघों की जनसंख्या केवल 121 रह गई थी, लेकिन गहन संरक्षण प्रयासों से 2013 में जंगली बाघों की संख्या बढ़ कर 198 हो गई है।

बेशक, नेपाल क्षेत्र और दुनिया दोनों में अनेक संरक्षण मोर्चों पर सबसे आगे है। 34,000 वर्ग किमी या नेपाल के कुल भूभाग के 23 प्रतिशत पर फैले 20 आरक्षित क्षेत्रों के साथ - संरक्षित क्षेत्र फल के सापेक्ष भू आकार के प्रतिशत के हिसाब से यह एशिया में दूसरे स्थान पर है। दुनिया में यह संरक्षित भूमि के सबसे अधिक प्रतिशत वाले 20 शीर्ष देशों की सूची में शामिल है।

2002 और 2010 के बीच, केवल आठ वर्षों में ही, नेपाल ने संरक्षित क्षेत्रों के अपने पोर्टफोलियो में 6,000 वर्ग किमी को जोड़ा है, जिसमें 10 राष्ट्रीय पार्क, तीन वन्यजीव आरक्षित क्षेत्र, एक शिकार के लिए आरक्षित क्षेत्र, छह संरक्षण क्षेत्र और अपने नौ राष्ट्रीय पार्कों के आसपास 5,600 हेक्टेयर 'बफर ज़ोन' शामिल है।

ये कदम नेपाल के 118 अनूठे पारिस्थितिकी तंत्रों, साथ ही लुप्तप्राय प्रजातियों जैसे कि एक सींग वाले गेंडे को कायम रखने के लिए ज़रूरी है जिसकी संख्या सीबीडी के अनुसार 2006 में 354 से बढ़ कर 2011 में 534 हो गई है।

शेर सिंह थगुना, राष्ट्रीय पार्क और वन्यजीव संरक्षण (डीएनपीडबल्यूसी) विभाग के डेवेलपमेंट ऑफिसर, आईपीएस को बताते हैं, "हमारी सफलता का सबसे बढ़ा कारण स्थानीय समुदायों के साथ हमारी निकट से भागीदारी थी जो अपनी आजीविका के लिए जैव विविधता संरक्षण पर निर्भर करते हैं।"

महतो जैसे लोग, जिनके लिए संरक्षण एक विकल्प नहीं किन्तु जीवन जीने का एक तरीका है, उन्होने अवैध शिकार रोकने के प्रयासों सहित सरकार की अनेक पहलों में भाग लिया है। सभी राष्ट्रीय पार्कों में अवैध शिकार की गतिविधियों को रोकने के लिए स्थानीय समुदायों में से लगभग 3,500 युवाओं को कई हज़ार वर्ग किमी की निगरानी रखने का काम सौंपा गया है।

पिछले एक दशक में सहयोगात्मक संरक्षण ने बहुत तरक्की की है। 2006 में, सरकार ने पूर्वी नेपाल में कंचनजंगा संरक्षण क्षेत्र के प्रबंधन की ज़िम्मेदारी स्थानीय प्रबंधन परिषद को सौंपते हुए, पहली बार किसी संरक्षित क्षेत्र को किसी स्थानीय समुदाय के सुपुर्द किया है।

नेपाल की नवीनतम राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति के अनुसार, 2012 तक देश के सभी घोषित बफर ज़ोन, जिनमें 27 जिले और 83 ग्राम विकास समितियां (वीडीसी) शामिल हैं, उनका एक साथ प्रबंधन 143 'बफर ज़ोन प्रयोक्ता समितियों' और 4,088 'बफर ज़ोन प्रयोक्ता समूहों' में लगभग 700,000 स्थानीय लोगों द्वारा किया जा रहा है।

एक अध्ययन के अनुसार, अन्य पहलों, जैसे सामुदायिक वानिकी कार्यक्रमों का क्रियान्वयन - जिसमें 2013 तक "17 लाख हेक्टेयर वन भूमि का प्रबंधन करने वाले 22 लाख परिवारों का प्रतिनिधित्व करने वाले 18,133 वन प्रयोक्ता समूह शामिल थे" - ने वनों की कटाई को रोकने और स्थानीय लोगों द्वारा वन संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता की है।

2004 के बाद से वन विभाग ने 20 सहयोगी वनों को तैयार किया है जो हिमालय की बाहरी तलहटी पर स्थित दलदल और घास के मैदानों से भरपूर बेल्ट, तराई के 10 जिलों में 56,000 हेक्टेयर में फैले हुए हैं।

इसके अलावा, 39 जिलों में शुरू किए गए एक पट्टाधृत वानिकी कार्यक्रम में गरीबी उन्मूलन के साथ संरक्षण को शामिल किया गया है, जिसके द्वारा 7,400 गरीब परिवारों को वन संबंधित चुनिंदा उत्पादों के सतत प्रबंधन और कटाई में शामिल कर 42,000 हेक्टेयर से ऊपर की वन भूमि को संरक्षण देते हुए उन्हें आजीविका प्रदान की गई है।

सरकार के लिए वनों की हानी और उनका कम होना एक बड़ी चिंता का विषय है, सीबीडी को 2014 की देश की एक रिपोर्ट में गौर किया गया है कि स्तनधारियों की 55 प्रजातियाँ और पक्षियों की 149 प्रजातियाँ और साथ ही वनस्पति की अनेक किस्में खतरे में हैं।

यह देखते हुए कि नेपाल में दुनिया की कुल वनस्पति का 3.2 प्रतिशत है, ये रुझान चिंताजनक हैं, लेकिन यदि सरकार संरक्षण प्रयासों में स्थानीय लोगों को शामिल करने की अपनी तकनीक पर कायम रहती है, तो शीघ्र ही वह किसी भी नकारात्मक रुझान को रोक पाने में कामयाब हो पाएगी।

विशेषज्ञ कहते हैं, बेशक, "ऊपर" बैठे लोगों के सही दृष्टिकोण के बिना ज़मीनी तौर पर इनमें से कोई प्रयास संभव नहीं हो पाएगा।

"सरकार के शीर्ष स्तर पर राजनीतिक प्रतिबद्धता में कोई कमी नहीं है," घनश्याम गुरुंग, वरिष्ठ संरक्षण कार्यक्रम, निदेशक, डबल्यूडबल्यूएफ़-नेपाल आईपीएस को बताते हैं। इसके कारणवश, अवैध शिकार के खतरे को रोकने के एक तंत्र का निर्माण हुआ है।

डीपीएनडबल्यूसी अधिकारी कहते हैं, अवैध शिकार के विरुद्ध सुरक्षा बलों के सक्रिय होने के साथ ही, नेपाल ने 213 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष के कारोबार वाले शक्तिशाली उद्योग से जीत हासिल कर दुनिया में एक मिसाल कायम की है और जिसका उदाहरण है दो वर्ष में अवैध शिकार का एक भी हादसा नहीं होना।

हालांकि अन्य खतरे अभी भी बने हुए हैं - जिनमें बढ़ती जनसंख्या जैसे ज्वलनशील मुद्दे शामिल हैं जो बताते हैं कि बेहतर शहरी योजना बनाने के साथ-साथ बर्फीली झीलों के धड़ाके से बहने से होने वाली बाढ़ और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति देश की अतिसंवेदनशीलता को कम करने की ज़रूरत है जो उसकी पहाड़ियों के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा हैं - नेपाल उस राह पर चल रहा है जिसका अनुसरण अन्य देशों को करना चाहिए।

"संरक्षण एक लंबी प्रक्रिया है और नेपाल के प्रयासों ने दिखा दिया है कि अच्छी योजना फायदा पहुंचाती है [...]," जनिता गुरुंग, इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट (आईसीआईएमओडी) पर जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन विशेषज्ञ आईपीएस को बताते हैं। (समाप्त)